प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/30

पशुओं में फेसियोलोसिस रोग एवं इसके रोकथाम

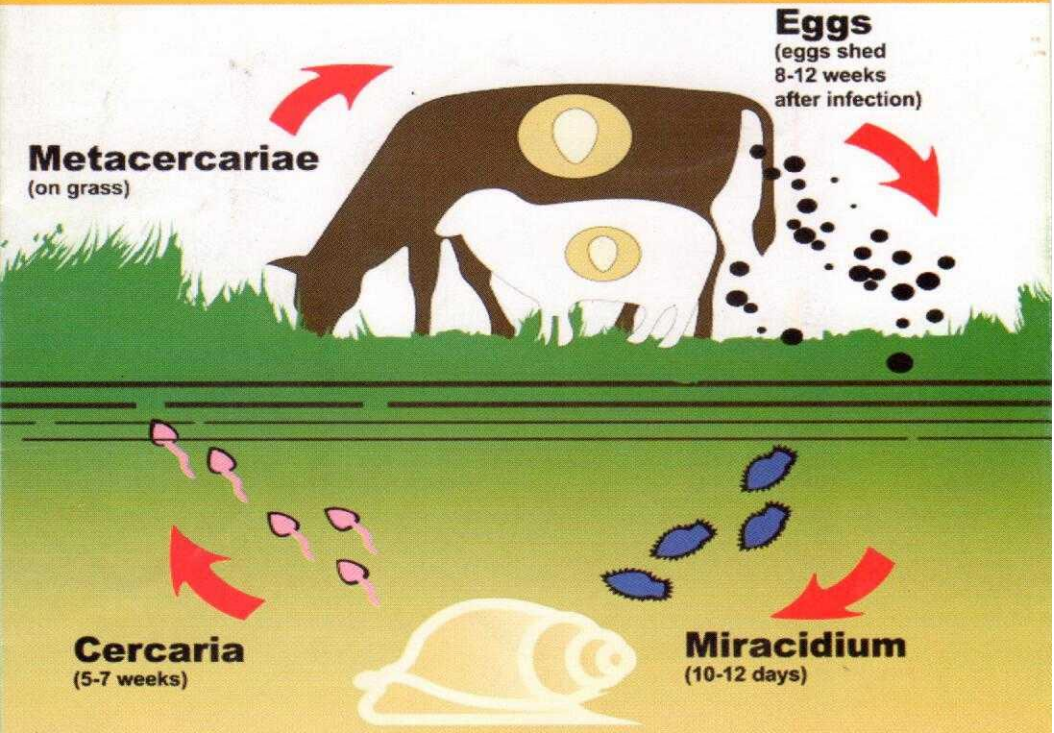

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

पशुओं में फेसियोलोसिस रोग एवं इसके रोकथाम

यह रोग प्रायः फेसियोला हिपेटिका तथा फेसियोला जिजैन्टिका एक पत्ती के आकार के फ्लूक कृमि के पशु के पित्तवाहिनियों एवं यकृत मे पाये जाने के कारण होता है । इसे लिवर फ्लूक रोग के नाम से भी जाना जाता है । इस कृमि का आकार पेड़ की पत्ती के जैसा होता है । इस रोग से प्रायः भेड़, बकरी, गाय, भैंस, घोड़ा, गधा आदि प्रभावित होता है ।

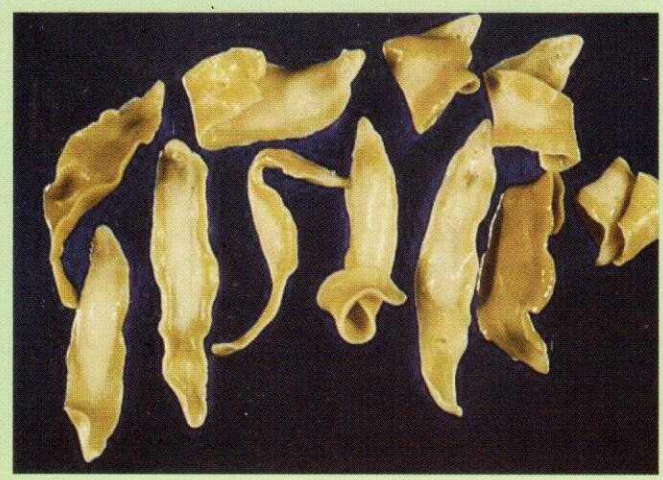

पत्ती के आकार का फेसियोला कृमि

रोग का प्रसार-

इस रोग के फैलाव मे लिमनीया जाति का जलीय घोंघा मदद करता (मध्यस्थ पोषक) है । फेसियोलोसिस रोग से प्रभावित पशु के गोबर के साथ कृमि का अण्डा बाहर निकलकर विकसित होकर मिरासीडियम लार्वा बनाता है जो घोंघो के अन्दर पहुँच कर दुसरा लार्वा बनाता है और फिर सरकेरिया लार्वा के रुप मे बाहर निकलकर जलीय घास से चिपक कर मेटासरकेरिया सिस्ट बनाता है। फिर सिस्ट संक्रमित घास के चरने के साथ मेटासरकेरिया पशु के शरीर के अन्दर पहुँच कर रोग पैदा करता है।

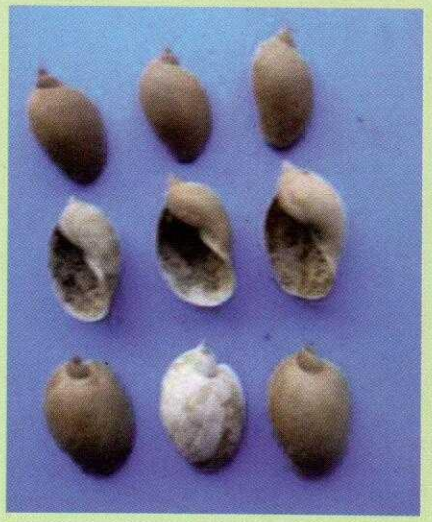

लिमनीया जाति घोंघा

रोग का लक्षण – प्रभावित पशु के भूख मे कमी, पाचन क्रिया के बिगड़ जाने के कारण पहले कब्ज व फिर पतला दस्त, खून की कमी, जबड़े के नीचे सुजन (बोटल जॉ), दुध उत्पादन मे कमी, पशु का धीरे– धीरे कमजोर हो जाना एंव पशु की मृत्यु हो जाना। अल्बुमिन प्रोटीन का शरीर में कम हो जाना जिसके कारण जबड़े के नीचे सुजन (बोटल जॉ) हो जाता है । फैसियोलोसिस रोग से प्रभावित पशु की लाल रक्त कोशिकाओं में अत्याधिक कमी (0.5 मि.ली. प्रति फ्लूक) हो जाती है ।

रोग की पहचान–

इस रोग के हाने की संभावना उपरोक्त वर्णित लक्षणेां के आधार पर किया जा सकता है । इस रोग की पुष्टि हेतु संक्रमित पशु के मल का सूक्ष्मदर्शी से परीक्षण कर फेसियोला (लिवर फ्लूक) कृमि के अंडा को पता किया जाता है ।

फेसियोला कृमि का अंडा

रोग का उपचार– फेसियोलोसिस रोग के उपचार में ऑक्सीक्लोजानाइड या ट्रिक्लोबेन्डोजोल

पशुचिकित्सक के देख रेख में देनी चाहिए । कृमिनाशक औषधी के अलावे सहायक औषधी जैसे– लीवर टॉनिक एवं दस्त निरोधक का उपयोग अवश्य करनी चाहिए ।

रोग से बचाव-

चारागाह के आस–पास जल जमाव नही होने देना चाहिए एवं जलीय घोंघों से संक्रमित स्थानों के आस–पास पशुओं को नही चराना तथा घोंघा से संक्रमित तलाबों में पशु को स्नान नही कराना एवं पानी भी नही पिलाना चाहिए ।

- जलीय पौधों एवं घोंघों से संक्रमित स्थानों के आस–पास से चारा लाने के बाद अच्छी तरह साफ पानी से धोने के बाद ही पशुओं को खिलाना चाहिए ।
- घोंघा को पनपने नहीं देने के लिए,जल का जमाव नही होने देना चाहिए ।
- घोंघा संक्रमित जलीय स्थानों पर घोंघा नाशक रसायन जैसे– कॉपर सल्फेट 22.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से बालू के साथ मिलाकर अधिक धूप वाले दिन, घोंघा मौजूद जलीय स्थानों पर छिड़काव करना चाहिए ।
- तलाबों आदि में बत्तख पालन करना चाहिए ताकि बत्तख घोंघा को खाकर नष्ट कर देवें।
- कुछ जलीय मछलियों जैसे– पैनगेसियस, ओसफेरोमेंनस आदि पालनी चाहिए क्योंकि यह मछलियाँ घोंघा को खाकर समाप्त कर देता है ।
- पशुओं को मई एवं दिसम्बर के महीने में इस रोग से बचाव हेतु ऑक्सीक्लोजानाइड कृमिनाशक दवा प्रति वर्ष देते रहना चाहिए ।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरण:- पंकज कुमार, अजीत कुमार एवं राज किशोर शर्मा

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021   Printed Under - SC -PLAN